

महावलि आसारूत

कस्तूरय

वलि लायके ता

कामेशा

मुनाति आ भा हं नी या हा लय थ ॐ विमदन

स

आश्विन नक्षत्राधि	
921	

ASHA ARCHIVES

महावलि वासासुत
वलि वासासुत
महाने वासासुत

अर्थमहावलि सारक ॥ ॥ वलि विस्तृत य ॥ ॥
गिर्यांशु लि ३ ॥ मूलन ॥ ॥ मूनवनि सहा
यक ॥ अऊनादिवलि ॥ उमचधुवलि ॥ ॥
कालिवलि ॥ मूनवनि स ॥ समयवलि नधुनक ॥
गमा मूलवलि सहायक ॥ जं कूं सों ४ अऊल
धूपकं मृष्ट ०० न्याश्चन सधेव

च ॥ ०० नु मृष्टिश्च उकार्य उष्मा (धु) निपु मदनी ॥
ममूका ० पकार्यश्च ० ना पादं कद वृकं ॥ नि
रावगश्च उपायम्वा ० खे विष्णु सधायन ॥
अनका अर्थवाक्यश्च ० कमनाश्च कनायनी ॥ गम
मृष्टि (धु) वयधुश्च ० दधमश्च धुधनक ॥ चूढ
माय उगिलाखा ० सैकाना न्यहन श्वन ॥ नका

पात्रिस्तथाचान्य अनवद्वयदात्रक ॥ रंरुक्क
दगिकान्क सुविहृक्क विनस्तु ॥ दन्नाधनः
दग्नेव नागकध ॥ पुचधुवान ॥ रुन्मायाविन
सिंहधु र्दकविहृक्क मलाहर्न ॥ रुगन्नात्रवधु
व लम्मा स्तावसनस्तथा ॥ गूक्क पुधुषजनाधु
सनाखदुदुक्कस्तथा ॥ दयान्क कस्तुपश्चात्क

उपात्राउदाहना ॥ पश्चात्सदधुम् द्वात्रस्तान्तं
रुगपालका ॥ सखावधुविहिनास्तु रुगपाला
धुगुदधु ॥ नुकलिगवदुक्कात्र समस्तानचर
यावह ॥ महालक्ष्मिवलस्थान ऊलाग्दुवसन्त
दा ॥ नुकव्यदुवगवोध विजानेवदनावध ॥
यध्मनावागूहावास्य पद्मषष्टुजनाम्वर्न ॥ सज्ज

भहलिधनोद्य ४ पर्वभागमन्त्रगुण ॥ लिमृत्र
धुवनपहा निवामनिचरनुर्व ॥ लसकुरुष
नाश्रुका उरुवागेषुकाष्टक ॥ अर्नध्यसवनवि
द्या दृष्टमेधुवमृगा ॥ चतुषष्टिमहाविन्द्या
पालयित्वाहिनाङ्गन ॥ ननुर्दुसदाकालिव
लिपूजानिर्वदयन् ॥ चत्वारस्तुतुपातादिना

द्यागङ्गनवल्लि ॥ हस्वगर्हन्पद्विचत्वाचानिव
लिवादिध ॥ नित्याधिकारीचत्वार केश्यादि ०० न
प्रजयन् ॥ वर्वरापिङ्गलकसाश्रु पिङ्गनलह
पिङ्गलनाचना ॥ इत्येकनाभ्रएगम कपात
ननादना ॥ कस्मिन्चनुग्राषन्द मृगलिमिन
हधुर्व ॥ पृथगेनल्लुपाचक्रे दिपेधूपस्तु

ॐ ॥ तानिगान्महाबाह्येष्ट कर्मपूजापनायने ॥
यष्टावाह्येष्टाजिनाद्ये सुविगोका मया सदा ॥ ॥
कुर्वां कुं नमः काय नवेन २५ गुणानामहावच
कपिलजना ॥ तानेष्टाष्टनविभक्तानामुष्माग
धपूष्यवल्लिपूजा गृह्य २५ नवकषेन गुह्य २५
२५ २५ १ महागानेनाधिपनय कुं महेवनेदः

ममस्वाहा ॥ ॥ मन्त्रनामस्तुवन्नी १ विधिवद
लियानेन ॥ धर्मादिस्तुवन्नेन भाष्यमन्त्रादी
कृत्य ॥ नित्यं पुष्पादिना नोक्ता सवृषीवल्लि
तवेन ॥ ॐ नमो नल्लेन कामने संगममचस
पाक्ये ॥ नमो नादिस्तुवन्नालायवलिगृह्य २५ स्वाहा ॥
ॐ विनमो नादिवलि ॥ ॥ उग्रचक्षुव

सि वि च ॥ जु ऊ या श्व वि ऊ या श्व व ऊ य नि चा प ना
क्रि गा ॥ न न्दा ह न्दा ऊ या ति मा क नो श्वे वा लु का :
स्त्रि गा ॥ १ ॥ दि द्यु ऊ नि मा हा ऊ नि सि दि ऊ नि
ग न स्व नि ॥ सा कि नि का ल ना वि श्व उ द्भ र्क ति नि
सां क नि ॥ २ ॥ ग मि ना या य क्क ना ये व नी गि उ
वा नि का ॥ ति स्व ना श्व मा हा न न्दा दो ला म् दि रु

ये व च ॥ ३ ॥ पि सा चि रु स्त्री नि ष्वे व ऊ कू नि धू
ऊ नि रु थ ॥ ति ष र कू स र्व सि दि ने वि ॐ ॐ ॐ
न ये व च ॥ ४ ॥ दू का नि ता ल लि दो दि धू मा
दि क न पि थ ॥ मा न गि का क दि वि श्व ने थ नि
पू न चा न्द वि ॥ ५ ॥ ना द्द नि धा न ना द्द न्द न्द
दि वि श्व न् पि नि ॥ ऊ य क नि वि ष र दि स्वे स्का

गीनलराऊनि ॥७॥ विलरुदमाहाकाविर्क
कालिविकगानना ॥ काधनातिमरुन्दाधुवा
पुत्रगमतरयानना ॥ १॥ वक्राधुवेसुविनेन्द्राच
चिका ०० ध्वनिसुध ॥ वानाहिनातसिहिच भि
वाइनिचेतुषर्गिका ॥ २॥ ०० न्यदेन्द्रा माहायोगि
वलिगुट्टा ०० भसदा ॥ कांचेवसुस्थिथागिनिथा

वलिगुट्टा २ सर्वसान्निक्त्र २ ममसिद्धि कुर्वन्कुट्ट
२००० स्वाहा ॥ १० ॥ ~~ममाकालिवनिविय~~ ॥ नुंकां
धां नुंरु ४ नभाकुका कुव, कुवपा नाय अस्मा
अस्माक सहिनाय येरुहि, पुनर २ मूर २ स्व
न २ अभाय माहावल पलाके म, ग्रागुसुका
लिका अस्मा अवरुन २ हाकु, हिंरु, दूरुट ००

मावलियूजां गङ्गा २ स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ न क व वि रु
न क व लि रु ॐ ॐ न म स्वाहा ॥ ॥ ग न नि पु न
या व नि वि र ॥ ॥ नं क्रां सो ॥ सर्व पि (थ) प पि थ
नि द्वा ला पु द्वा न भ व च ॥ द्वा या प द्वा त सं द्वा हा ॥ स
र्व दि ग्हा ग स ह्मि ना ॥ या मि नि धा ग वि न न्दा ॥ सर्व न
य स मा ग र्ग ॥ ॐ द प र्व मा हा च क्क शि ना थ व न दा

म म ॥ थ रु क्का ॥ सा स न द वी गु नू पा दा र्च न न न ॥
स र्व सि दि पु सा दा भ द वी न स्वा म्भ व न्म दा ॥ वि न
ना था गा णी ॥ थ सि दि स म ही न न ॥ न द न्ना
व लि द वी स म या ग्म न म ल क ॥ ॐ नि ह्म नि म
न ॥ पु स्मि मा स म दा ह्मि डि वि र्ग ॥ नि कू ग य न्द
इ स्मा नी यो मि नि ग द स वू ला ॥ ॐ क ना दि पू र्ज

पिण्ड स्तूपस्य नाऽयुक्तिरिति ॥ उपपिण्डस्तु स
दाहा स्तिष्ठन्नुत्तमयस्तदा ॥ महियादालवुक्ता
धुस्तर्वल्लानां नीवृत्त ॥ यागिन्यायागशुक्ला
न्मा समयनिस्तु साधको ॥ विनकर्मस्त्विनन्द्या
स्तथैतिर्वृत्तुदवगा ॥ निदाध्यपूर्तुकावायाऽस्त
धकास्तमयनथा ॥ नगत्रवाथग्रभवाऽस्तुशा

न्वास्तलद्वय ॥ वापिकूपववृद्धवास्तमानमातृ
मधुस ॥ नाध्मत्रयधनदद्या वदुधमयावावस्ति
गा ॥ नचसर्वपिस्तन्नुक्ता वलिगर्दन्नुत्तर्वन ॥
स्तलनागनाहस्तुषी सर्वभगन्नुत्तर्वन ॥ यान
दुत्तन्मयाकर्म यन्तुकेविष्यामिदुत्तुक्तेन ॥ वलि
पुष्पप्रदानेन सन्नुत्तमानमचिन्तको ॥ सर्वक

मनिशिश्चक्र सर्वदा वा १ प्रसन्नम ॥ गिवसकि
प्रसादनं श्रीकालानुमाय ह ॥
ॐ निसमयवलि ॥ ॥ शुक्लचक्रां चक्रां अरु
यैर्द्रुं रुठ स्वाहा ॥ अहलखिनम ॥ श्रीषठकेनम ॥
अनिवलिगुद्र स्वाहा ॥ वृष्टनिनम ॥ नकांदि
नम ॥ अमअनवागिनम ॥ स्वचलिनम ॥ मअ

नवागिनम ॥ ॐ दूयागिनम ॥ ॐ दूरेनवा
यनम ॥ विकर्माधनिनम ॥ लम्बकेषिनीनम ॥
हहकात्रकी त्रुंकात्रका तथागिवनिगुद्र
स्वाहा ॥ काजात्रन्ध्रनिमहाद्रिका लक्ष्मणा
नायवलिगुद्र स्वाहा ॥ त्रुं द्रुं सौं १ पूर्वपिथह
गुक्कयपानायवलिगुद्र स्वाहा ॥ ३ दक्षिणपि

ध अग्निर्वेनालक्ष्म पा नाय वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥
३ नेमश्च पिथ अग्निद्रिक्कानक्ष्म पा नाय वलिं
गृह्ण २ स्वाहा ॥ ३ चतुर्नपि ० कला नक्ष्म पा ला
य वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ३ वायुश्च पि ० कालाक्ष
क्ष्म पा लाय वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ३ उरु नपि ०
नुक्क पा दक्ष्म पा नाय वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ३ ॐ

सानपिथ हिमक्ष्म क्ष्म पा लाय वलिं गृह्ण
२ स्वाहा ॥ ३ ऊर्जाक्ष्म अश्वेक्ष्म क्ष्म पा
लाय अश्वेक्ष्म देवि भक्तोसहि नाय अष्टलक्ष
गृह्ण २ नु नु २ मृक्ष्म २ स्व २ ० ० २ हा २ मा हा दा
मनाधिपय ॐ मा पूजा वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥
नं कर्त्तुं १ वक्ष्म वक्ष्म (धु) स्व धु द्विपत्रवि

नसदा नि^{नि}न्धुन्धपवन्ध ॥ नान्धाकृषुनकृ
पञ्चपिनिनपेन पवनापुनयाग ॥ वरुन्
न्या नलानकृवृवेन कगिनिनाद्युवनिष्ठ
सम्भ ॥ दविचकृ चिदिष स्वयमनिवनवा
वननारुपुनान् ॥ उदुवक्राद्युगावा दिवि
गगधनल निहसहगलवा ॥ पागात्रवा

नत्रवा सलिनपवनथा अत्रकृगृहिगावा ॥
पिथं कृनापपिथा दिष्टचपनकृना ॥ पृथव
न्यादिक्कन पिगादेद्या गृधन ॥ गृहवलि
विधिना पात्रुवित्रन्युन्या ॥ सान्धसिद्धचसव
अलिपिनिनवल्लिपूजा गृध २ ममसा नि काम
खाहा ॥ ॐ मीवल्लिपूजा गृध २ ममसा नकृः

२२ रुट स्वाहा ॥ निर्बो न काय ३ स्वाक महा
कलिन धूने क ॥ धूप दीप नेवाये ॥ यना ॥ ॥
थना माले कया सहय ॥ ॥

मूलनगिया पूति ॥ नं डों शों फूं फों ॐ डों ना
इ प्र द फूं उ ग च धि वि प्र म दि नि दू रु स दान
दर स्वामी ई स ४ म् ए ह न स्वाहा ॥ पाइ कां ॥
॥ ह सा स ना य न म ॥ ॐ डों शों रूं रूं
आ रु ड च धु य म् १४ व फा ल्ये पाइ कां ॥
॥ आ स्वाहा ॥ ॥ वृषा स ना य न म ॥

नं क्रीं श्रीं ॐ ॐ श्रीं क्रीं प्र चक्षु य कं ५ मं मा ह ष
नी पाइ की ॥ ॐ स्वाहा ॥
मयू नाह नानम ॥ नं क्रीं श्रीं चक्षु गाय
चं ५ कं को मा नी पाइ की ॥ ॐ स्वाहा ॥
मयू नाह नानम ॥ ॐ क्रीं श्रीं जं जं ॐ चक्षु

नायि काय टं ५ कं वे पू वी पाइ की ॥ ॐ स्वाहा ॥
महि पास नाय नम ॥ ॐ क्रीं श्रीं टं टं ॐ चक्षु
य नं ५ कं वा नाइ पाइ की ॥ ॐ स्वाहा ॥
मयू नाह नानम ॥ ॐ क्रीं श्रीं नं नं ॐ चक्षु
व गी पं ५ नं नं नं नं पाइ की ॥ आप ॐ ॐ
स्वाहा ॥ ॥ प्र नाह नानम ॥ ॐ क्रीं श्रीं ॐ

१ततोविष्णुशान्तिवलि॥ ॥विष्णुन्यासयाया॥आवाहनश्रीसंवत्तानि
देवा॥ततःयूजा॥वलि॥ॐ नमोभवेतेवासुदेवायेनमो न्यताय सह
सुशीर्षायक्षीरोदासीनशायिनःशेषभोगयर्थकायगरुडवाहनाय
अजायअजितायअघराजितायअमितायपीतवाससेवासुदेवशक
र्षणवधुमायानिरुद्धाशिवराहनरसिंहवामनत्रिविक्रमरामराम
वरप्रदनमोक्षुतेत्वाहा॥ॐअसुरदैत्यदानवयक्षराक्षसभूतप्रेत

पिशाचकुष्माण्डसिद्धयोगीनींटाकिनीत्कंदययोगानुग्रहनक्ष
त्रग्रहंश्यान्यानहनश्चरश्चमथश्चविध्वंशश्चविदावयश्चखेनच
क्रेणवजेनशूलैर्नबादयासुलेनहलेनभस्मीकुल्लसहस्रबाहोस
हस्रधरणायुधजयश्चिजयश्चजितेअमितेअघराजितेअघ
तिहतसहस्रनेत्रोज्वलाननज्वलश्चज्वलश्चविश्वरूपवरुणरूपवराह
मधुसुदनमहावराहायुक्त्वैकुण्ठनारायणैयप्रनाभगोविन्द

रत्नधरणिधारणितौदामिनि. अदितेदिते विनते गौरीगाधारि
मातसिक्कसजशादे सतेवादिनीबलवादिनीकालीकायासिनीक
लोहनेत्र सर्वोयथाचनकालिनीजलगतं स्थलगतं च त्रीक्षगतं मा
रक्ष १ सर्वभूतसर्वोयडवेत्यः स्वाहा ॥ ऐकाहिकद्वाहिकत्र्याहिकचातु
र्थिकमासिकद्वैमासिकवार्षिकयेत्त्रिकश्रेष्ठिकसात्रियातिकष
डज्यसविषमज्वरयहनक्षेत्रदोषानहन १ कालिसर १ गौरीधर १ आसे

ताले मासे ग भे वधे श य च श म य श वि से ना श ये या यं हरु त्व त्व प्र चि ना
श मि र ज नि स भ्ये ड नु मि ना दे मा न सि वे गे स ख नि च क्रि नि व क्षि
नि श्रु ति नी न्य य म तु वि ना धि नी वि शे श्व रि ड वि डि डा वि डि के श र द यि
ते य सु य ति म हि ते ड नु मि ना दे डः ख ड र ने नी म म र्दि नि श र नि कि
रा ति मा तं गि ॐ कौं कौं कौं तु र श ये मां द्वि य त्रि य त्प दं य रो क्ष म्या ता
न त र्क्षी ण ह न श द म श य च श म र्द ये श या त य श श ष य श उ द्वा द य श व

ह्मा णी मा हे श्व री वा रा हि वै ना य कि रें दि न्ना ग्रे यि च मु णे वा रु णे
वा यु व्वा र द श य वा ण श वि प्र र म नि रा म नि ध र णि त य नि ॐ इ डो ये
दु न गि नि ज ये वि ज ये शा त्रि यु द्वि त्व ति धृ ति चि व र्द्ध नि का मा कु
शे का म ड ये स र्व का म व र दे स र्व भू ते सु मां यि यं कुरु श्वा हा ॥ ॐ
आ क र्ष णि य वे स नि ॥ ज्वा ला मा लि णि तु र नि तु रो त्य त्रे त यि नी म
दो मा दि नी शो व नी ल म्भो ह नी म हा नी ले नी ल य ता के म हा गो री म

हाशोरी महाश्रिय महाश्रिय महावादी महारोडी माहमासूरी आदि
त्यरस्मिजाङ्ग वियमघाट किलिश विनामनिसुरासुरोत्पन्ने सर्व
कामउद्येयथा मनिधितं कार्यं तन्ने सिध्यतु स्वाहा ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ ॐ भु
वस्वाहा ॥ ॐ स्वस्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वस्वाहा ॥ ॐ यत्र रेवागतं वार्यं त
तैवयति गच्छतु स्वाहा ॥ ॐ वलस्वाहा ॥ ॐ अवले स्वाहा ॥ यस्याः पुन
स्पतेषुष्यं नर्त्तनी वायतते यदि ॥ प्रयते वासुका च स्या काक वंध्या च

जाभवे ॥ भूर्ध्वयत्रे त्विमां विद्यालित्वि त्वाधारय अति ॥ ऐतैर्दोषै
र्नृत्तिव्यत शुभगायत्रिनीभवे ॥ रणे राजकुले युते नित्यं तस्य जयो
भवे ॥ शस्त्रं च वारयेत्यवा समरे काण्ड वारिणी ॥ गुल्म सूलोक्षिरो
नां क्षिप्यं नाशयते व्यथां ॥ शिरो रोगज्वराणां च नाशन सर्वदे
हिनां ॥ ॥ अथ ते श्रीविष्णुशान्तिवर्णिते समाप्ते ॥ ॥ शुभं मस्तु स
र्वदा ॥ ॥

ASMA ARCHIVES

921

ASMA ARCHIVES



ASMA ARCHIVES

921

SHAH N. H. K.

उत्तमाने आनन्द कलश नय साधु सहय ॥ नि
निर्मल नया चक्रे लक्ष्मि न ३ ०० ल का प वि
लका मिश्र वि श्रेष्ठ चपु गाले चाया न म
गाम्ना साग्वन उदय ग चन्दन लक्ष्मि विदुषो
सिधते उलगय विरु साफलनी दक्षि का पना
स्वस्ति नो मिमी ना सोसा ला वये दु गायन ॥ प्र

कलश पथ पन विधि ॥ ॥ कुलि नाह ववी
श्व ग श हरे व वाक् च द ॥ पृथु र व स ख द ह म
(म ४ पू नी व वाहन स्वाहा ॥ दर्वे सि र कि सुन
ह प नि वा न स म वि न खा व द ग मि प र्श न ना
व ल च लि ना ह व ॥ ॥ अया दि ह यार्थ ॥ वाक्
कु शं स ४ मृ ल ३ या य मृ नी व ना य न म १ ॥

आन शुद्धमृटिकं कां विभज्य च न्यमालि
नं । तत्राह यकनीं मृदो मालाह गहनं ॥
नवं क्षालामहादवं ॐ सुकामार्थसिद्धयनं ॥
न ह्यसंधासकलनीयं कलनपूष्पं स्वच्छं
पत्रवत्प्रसादिनपूष्पं माला । यस्तु पूष्पास्तु विष
यमृनिहिसुमस्तु लीकुं मृत्किं विवर्गकिय

ननमा ॥ नभामुनकायनि ॥ क्षारं कलभया ॥
त्रियां कलिमूलं वदग ॥ ॥

नकिन ~~क~~ निवभक्ति कल सता नकनय ग्वर
नायकनं जानकनय कलभग्वर धनिकेचाया
वरुकरुचक ॥ लाहोनि कधे स्वस्ति कचाय क
लभ लाहामिभनय ॥ ॥ ~~न्यादि~~ पृष्ठाहा
उन ग्रासंम्वर्क खादवी त्यामानकना मायाक
धुनी सिद्धनमुक्किलरह्यादि ॥ ॥

वृष्णननं पृजाहालकाय ॥ ॥ ~~न्यासयाय~~ ॥
पा१ कपलास द्रुभवनन ॥ सप्तानयाचक स्व
स्तिन ०० न्दा लख पयपृथिव्याइइ दक्षिकोप्रा
नडा सिधे ल मधुवा ना कस्ति चन्दन उदय
ग लेउ विवृदा सिधल मोरुलेनी स्वान उंगपवि
उ ॥ गियाउलिउ ~~लाय~~ उवाकभम ॥ पलखन

अजमानका अरिहंस्वविरा पलमानपूनीका अ
हिरंस्वविरा नीर्मचयाचक ग्वनविरा लासा
बधासनय नका मूलमन्त्रा पलपडे न
कानहाल हिलहाल क कायाच सलस
कियकनये ॥ ॥ चने हानविरा ॥ ॥
नवला हान धूना विविधये वाहालसंयथ

विविधना ॥ ॥ कथसंयथविविधना उथ
दसकनाद ॥ ॥ कलभाचन पाथयाय
दगुल पच्छिन्नयाय गुत्र नमहाल नीहया
काहय थवयानीय केमयाथद नकाउथ
द ॥ ॥

कोमानी लुचा वाष्म ह्यनं नय चायाथसनय ।
वाष्म ह्ययाय सलायिनय ग्वंजाचुलग्वन न
चपावचुगुनय दगुनीयाय पक्तिमय दगु
नीगुननमहलानी स्यादाहये ॥ इडपाव सनय
दगुधुदगुवन । कलशचयाय मल
कमलैडय कलशचधुदगुवन । पाथयाय ।

चक्षुपाथचुद्रुधुद्रुन । पाथधुदगुवन ।
वल्लिथय धवकमयाथन वाष्म ह्ययाविधि
थुलि ॥ ॥ कलशवायया
विधि दधुसकलसनय दिगकलसनय ॥
गद्य वदुके कुरुपाल यागिनी धर्मध
नवलियाय ॥ निवधकिग्वरे वलिवाययागा

थं पाहे लव पाउ १ वृक्षा यही पाउ १ वा नाहि
पाउ १ को माना लुचा सचा रु गु ग्व जा ग (ध
सक अचार्य ने पा शिव ॥ ॥ वाहा लया
विधि ॥ ॥ कथ या वलि का
य मा थं पाहे लव पाउ १ को माना लुचा सचा
गु ग्व ल जा ग (ध भ क ग्व २ ग्व १ क ल ग स्थाप

न निव भ कि ग्व २ स्वर्ग स्थाप न कथ माल ॥
वाहा लस नव मिषू डू महा वलि विमाल वा क
ध ॥ ॥ ॥ दनु ल काय या कुल १० व
डि कू १० जा कि दू दू कू डू न चि द्या सा कू डू डू ल सा
ग्व २ का डू ल सा प ल चि कू १३ गु ग्व १ क ल ॥
रू १ ना काथ या व कू चि १ डू १ नी स लाल वाहा
माना उन य मा काय देव व डि जा कि न स्व च २० ॥ ॥

लया कृच्छ्र १ स क्रयद्विन नक्षत्र ३५६ ॥
वाक्फलया दग्नीया ग्वजो शालहवनसग
यकलकाय द्रुपा थवनोखानकाय श
चाद्यनाविय नायेकनाखानविय नकि
नाविय पल मानपुनीनाखानविय द्रव
नचाक् सकलनाविखान ॥

गलस उंनु चायिशासिन उर्गचष्टियाः
उंनु पांनासनचाय कंधनय जानयाव ॥
ननाक्पिसकायानेक्तावाथयाकाय ॥ ॥
वाक्फलवा १ शचायवा १ शसिवा १ ॥
प्राक्कदवषूक् लोशनकमाल वाहालस ॥ ॥
काथस थथेशना श्रुमिषूक् लोशनकमा
लकाथस ॥

कायस अष्टमीषूद्रु वाक्क दसं याय विधि ॥ ॥
नकस कापलास कोलाद्रुसर्वं नय अद्यादि ॥
वाक्क ॥ पुष्पा लाऊन याच के शासला वेष्माय दी
स्यामानकना खादवी मधुकिनव सिद्धि न मुक्क
नोसिय न्यासेयाय सानयाच के सल्लिन नून्दा
पयपु पिंवा दधिकोपना मधुवांगा न आसि
इदमग चन्द्र तंज विष्णु दा सिधल उगप विव

लान आरुल नी कु न ला शानि कु दव सत्ता कु
गक्षनोत्ता कु व सु हे पानि मने स्माउ उवाक्क
हम ॥ ॥ निर्मचुने याच के ॥
पू३ स्वर्ग लाख च के दशना पु न दव ॥ ॥
लव्यन विय च व सिधल लान थल्लुल निवम
कि स्वर्ग शक् वाक्क दसं लां ला लायन ॥ ॥
थल्लुल निवम कि आचार्य न लासा लाय दीव ॥

अथ सनय ॥

॥ पिलहाल वाक्कदस्य ॥

मुनी वाच नला उनीहगा पलमाने माल नकी
नाय शवाच्य ॥ ॥ हि साकर्म शवाच्येन

या ॥ ॥ वाक्कदस्य सदाया धनशुक्लक

वाहालया विधि श्रुमिषुदु नवलाकथस ॥

पूजा आपयक नदिन नायक पिथपूजा वनेना

अथादि ग्रीसंभवा वक्कायधा ह्यामानकला ॥

पूजा वनेना वाइन माल ॥ ॥

वाहालसदृगुनालग द्रुपामहालका र्थपात्रे

लवना गलधना वक्कायधासना काथने विचा

काय ॥ ॥ ॥ ॥ पूजा वनेन वलपिथ

स वाक्कद शवाच्य शक्ति पलमान मनपूनीसुध

नवमिषूद्र वाहाल गचास अंनुचाय उगर्वधु
 या पागासने आसिनचा ००० व कंधाचास जाग
 ००० वे दिविकूल कलं पका पाय पका उदास
 हानमाल पाय ००० इदमय विदुदवसो हनाने
 मखाका मय ॥ ॥ ॥ कोमोनी पूजा व
 विपूजा गच्छ भ पूजा भमनवलि पूजा वाक्क ध
 याद गुलयागा दिविकूल अकलंगा ॥ ॥

वा २

स्वगन भादनीरुय कृ ४ जावि दं ८ दका का
 यागुल दं १३ स्वक्रिया भुजिल पिगाविरय गो ॥
 नकिनगा कृ २ जावि दं ४ दामे कृ २ जावि दं ४
 दामगागा सिहाव भे विरय माल ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ कोथया दं ८ दका दं ८ कायगा ॥
 नीसलाल वाहालया माल कृ १ वदि पात्र चि इ
 इपात्र १ आसिहोली आचोइली थथेइनी ॥ ॥

पुनानियाकलभर्चधयाविधि ॥ न्यासादि ॥ ग्रयगी ॥ निरी
कुं गलाजामि ॥ आसन ॥ कुं देवस्यत्वा ॥ अष्टकदी ॥
कुं दानादवी ॥ कुं चत्वाविष्टंग ॥ ॥
कुं शुभर्व ॥ आवाहनादि ॥ वलि ॥ कुं लवङ्गविष्ट
दा ॥ नद्या ॥ कुं अस्माकमिन्दु ॥ धृ ॥ कुं वृहस्पति
कुदि ॥ कुं ॥ धूप दीप नेवय ॥ कुं मनाश्री ॥
पुनिका ॥ जाप ॥ स्तोत्र ॥ कुं शुद्ध ॥ अने नित ॥ ॥

अत्र गन्धादि ॥ कुं कथानञ्जित ॥ कुं (भ) नास्तनदी ॥
०० गिमृ ॥ अकलभर्चन ॥ ॥ ॥ गालका
पूजा ॥ कुं द्वां श्रीं श्रीये नम ॥ कुं श्रीशुभलका ॥
कुं द्वां द्वां लका नम ॥ पूष्टिकाया नम ॥ ॥
आन ॥ कुं श्री ॥ अन्ति ॥ अन्तिकया ॥ शिवकय
जामह ॥ पूष्टिकाया ॥ वलि ॥ धूप दीप नेवय ॥
जाप ॥ स्तोत्र ॥ कुं अन्तिकाय नमस्तु ॥ पूष्टिका

यनमानमः॥ तदाममाधुननका न्कनविद्युवि
नासयेन॥ अगगन्धदि कुलनासनेन॥ नि
अनिक पुष्टिकलभार्चन॥ ७ ॥ ७ ॥

अ३निलमाधवयास्तु ॥ ॥ कुं संखदीन
वपुः॥ पुनाक नरुग नाभुतु नानायर्धं उगासीनि
पुनीनके विरुवनं विष्णुहवर्धयुतुः॥ दुर्वास्यामः
मनिरुषननावधवधनामयुगोदापननित्यक
रूलसनिहकवियुगमापातुदामादन॥ अः
दोमीनसतूपीवनकेम० वपुः॥ कालतूपीहमी
थदेत्यानिनातिहावलिवलमथनायामद
६

मिः स्वरूपः न नाभालं काविदा नीवहृगनय
वनावाधिसखावना नं ग्राग्राकृष्णावना नोदधदि
गविदिना माधवायं पुष्टम्य ॥ विष्णुमुनि ॥ ७ ॥
१ ततो रुड शात्रिवलि ॥ अघोरन्यासा ॥ आवाहन ॥ संवत्ता ॥ त्रिदेवा ॥ ततः पूज
ना ॥ शीशाने ॥ ॐ ॐ संतुष्टाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ हृष्याय नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ अविमुक्ता
य नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ असंनवाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ पुत्राय नमः स्वाहा ॥ ॥ रुडतत्त्व
उत्तरदले ॥ ॐ ॐ विस्वतूयाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ महाविश्वतूयाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ क

लालतूयाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ विस्तृततूयाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ विस्तृति तूयाय नमः
स्वाहा ॥ यस्तुतितत्त्वा ॥ वायुव्यदले ॥ ॐ ॐ ऐक्यिंगलाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ त्वेति यिंगलाय न
मः स्वाहा ॥ ॐ ॐ कृष्णयिंगलाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ मधुयिंगलाय नमः स्वाहा ॥ ॥ नियत
त्वा ॥ यश्चिमदले ॥ ॐ ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ आदाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ सुम्नाय
नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ अवयवोगाणाय नमः स्वाहा ॥ नैऋत्यदले ॥ ॐ ॐ कलाराय नमः
स्वाहा ॥ ॐ ॐ विकरालाय नमः स्वाहा ॥ ॥ मायातत्त्वा ॥ दक्षिनदले ॥ ॐ ॐ सहस्र श्रीर्ष
य नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ सहस्रवक्त्राय नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ सहस्रकलचरनाय नमः स्वाहा

॥ॐ जुं सहस्रसिं गायनमस्वाहा॥४॥ विद्यातत्त्वा॥ आग्नेदसे॥ ॐ जुं एक
जटायनमः स्वाहा॥ ॐ जुं द्विजटायनमः स्वाहा॥ ॐ जुं त्रिजटायनम
स्वाहा॥ ॐ जुं स्वाहाकासायनमः स्वाहा॥ ॐ जुं स्वभाकासायनमः स्वा
हा॥ ॐ जुं वषट्कासायनमः स्वाहा॥ ६॥ शीघ्रतत्त्वा॥ पूर्वदसे॥ ॐ जुं भूतयत
यनमः स्वाहा॥ ॐ जुं महाभूतयतयनमः स्वाहा॥ ॐ जुं यशुयतयनमः स्वा
हा॥ ॐ जुं उमायतयनमः स्वाहा॥ ॐ जुं सर्वयतयनमः स्वाहा॥ ॐ जुं काराधि

प्रायेनमः स्वाहा॥ ॐ जुं ॥ ६॥ शिवतत्त्वा॥ मध्ये स॥ ॐ जुं उमायेक रूपधालि
त्रेनमः स्वाहा॥ ३॥ मध्ये सहायके॥ ॐ जुं रुद्रशास्त्रिं प्रवक्ष्यामि वेता
रानां विनासनं॥ नराणां मुयमृष्टानां देवायतनवेष्टसु॥ येष्वां नय
न संभूतिः कुलहाश्च जायते॥ यत्र जात्रा विनस्यति न वति न युंसका
॥ ३॥ मारी चोत्पद्यते यत्र सत्ततं च गृह्यहा॥ गर्भयतत्यकालेन रूपं वा
यत्र यायते॥ ३॥ दुर्भिक्षो च बीज्यते राक्षोत्पातश्च दाहणी॥ गणायत्र
विदध्यते जातरश्चाश्चनेकशः॥ ४॥ यितामातास्तु वाचेव कंदलोयहते

गृहे॥ यश्चात्रिचक्रयिंस्त्यप्रेवीजंक्षेत्रेनरोहति॥ पागावोपयशवश्चे
वदासाः कर्मकलास्तथा॥ गृहेस्थिताविरुध्यन्ते तत्र शात्रिययोज
येत्॥ ६॥ कूयोवागर्ज्जतेयत्र यस्त्ववंशश्चमिद्युते॥ तरवोनाहताश्चे
व सुवन्तिरुभिरंवदुं॥ शादेवताश्चेवद्वक्षाश्च नृत्यन्तिवत्सहन्तिवा॥ अ
कालेयुष्मितावृक्षाः फलिताश्चाय्यनेप्रशः॥ ८॥ उक्तायाताश्चजायन्ते
भूमिकल्याश्चदाहणाः॥ निमित्तेरक्षुभैरेभि रत्नेश्चायिसुदाहणे॥ ९
॥ ऐकायययेतोभूत्वा तत्र शात्रियं याजयेत्॥ रुद्रशात्रिसमुत्पत्तौ

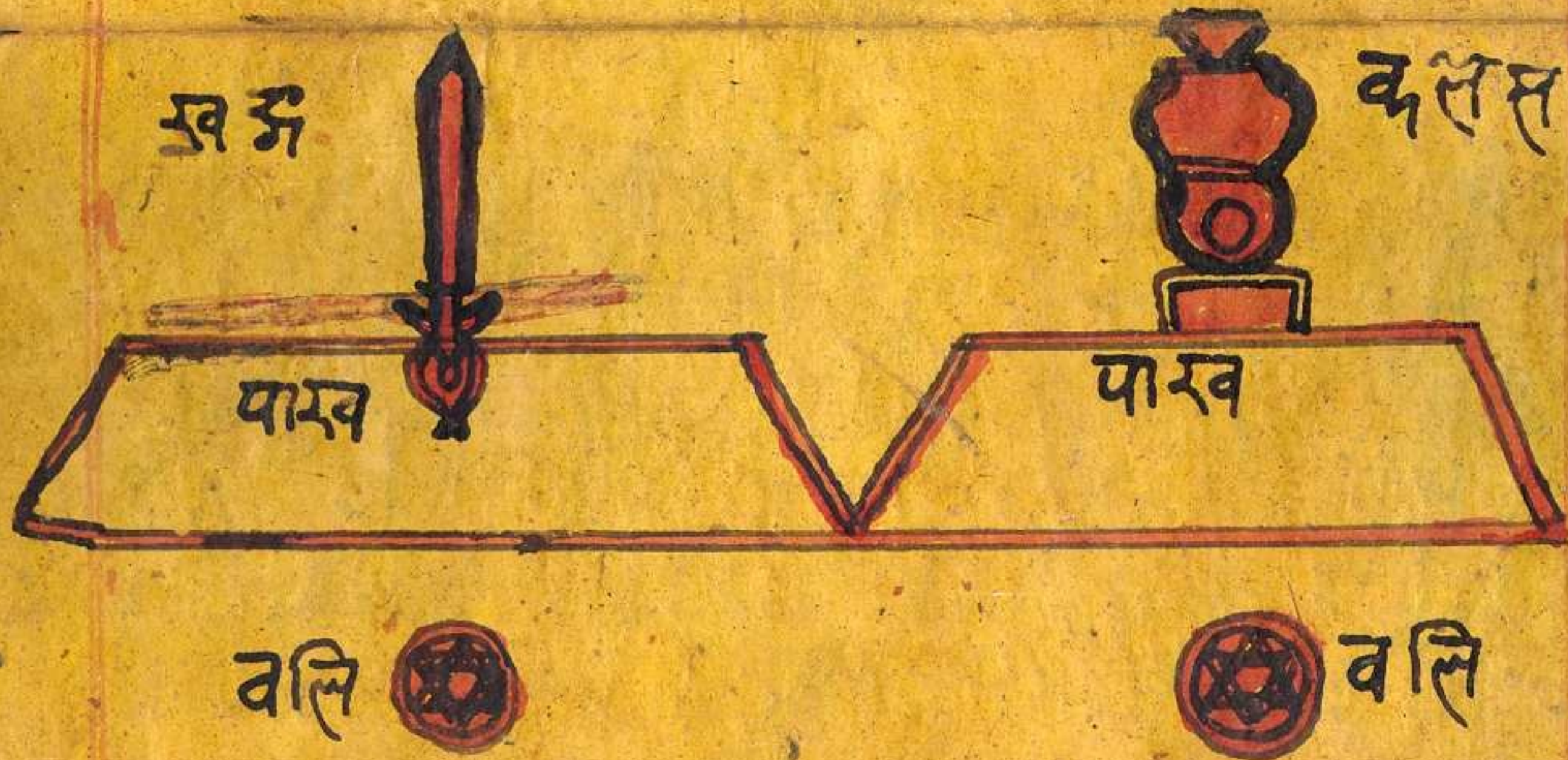
कथावक्षामितत्त्वतः॥ ॐ जुं ॐ दोहश्चरुणि निश्चरुडोशिदेवानां देवदेव
ः विशाखहनहनदहदहयचश्मश्चुश्चरुमुहश्चरुड शात्रिमनुस्म
रुक्तस्यिं गल अकालयि सावाभि प्रये बिश्चेश्चरायनमः स्वाहा॥ ॐ
जुं व्यायिनेव्यो मरुयाय सर्वव्यायिनेशिवाय अनाययाये अनाशि
ताय भूवाय अनेत्रो यशिवतन्वाय नमः स्वाहा॥ इति मध्य॥ पूर्वदले
॥ ॐ जुं शाश्चताय नमः स्वाहा॥ ॐ जुं योगवीठाय संस्थिताये नमः स्वा
हा॥ ॐ जुं नित्यं योगिने नमः स्वाहा॥ ॐ जुं ध्यानाहाराय नमः स्वाहा॥ ॐ

ॐ नमः शिवाये नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं सर्वप्रभवरीशानमः स्वाहाये नमः स्वा
हा ॥ ॐ जुं तत्पुरुषवर्चकाय नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं शुभाये नमः स्वाहा ॥ ॐ
जुं महाशिवतत्वाये नमः स्वाहा ॥ अग्निदत्ते ॥ ॐ जुं अघोरहृदयाय न
मः स्वाहा ॥ ॐ जुं कामदेवगुहाये नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं सद्योजातमूर्तये न
मः स्वाहा ॥ ॐ जुं नमो नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं गुह्यातिगुह्याय नमः स्वाहा ॥ ॐ
जुं गोप्रे नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं अनिधनाय नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं सर्वयोगावि
कृताये नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं ज्योतिरूपाये नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं शिवोत्तमाये

नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं इश्वरतत्वाये नमः स्वाहा ॥ दक्षिणादत्ते ॥ ॐ जुं परमे
श्वरयराये नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं श्वतनाचेतनाय चेतव्यामि नव्यायिने
नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं अरुषिने प्रमथनमः तज्जले जज्योतिनमः विद्यात
त्वाय नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं ऐकनेत्राये नमः स्वाहा ॥ नेत्रदत्ते ॥ ॐ जुं अ
रुष्यश्च नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं अरुष्यश्च नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं अरुष्यश्च नमः स्वाहा
ॐ जुं ऐकहृदाय नमः स्वाहा ॥ ॐ जुं मायातत्वाय नमः स्वाहा ॥ यश्चिम
दत्ते ॥ ॐ जुं ॐ स्व अनिधननिधन निधनो नव शिव सर्वयरमात्म
नमः हेश्वर महादेवाय नमः ॥ ॐ जुं त्रिमूर्तये नमः ॥ ॐ जुं कालतत्वाये

नमः॥ वायुवेदसे॥ ॐ सुः सर्वे रमा हाते जा ज्यो गाधि पे नमः॥ मुञ्च २ यम
 य २ सद्य २ भव २ भवो ३ व सच्च ३ त सुख ३ दे नमः॥ ॐ जुं महे च रा य निति
 यत त्वा य नमः॥ उत्तरदले॥ ॐ जुं सर्व शान्ति धे कर व ल विष्णु ह ड य र न्य
 नर्द्धित २ अ स सुत २ पू र्ण व क्षि २ सा क्षि न २ तु ह २ य त ग २ र्पि ग २ नमः॥ ॐ
 जुं श्री क ण्ठ य नमः॥ इ शान द ले॥ ॐ जुं ॐ ज्ञान २ शब्द २ स र्वा २ शिव स र्व
 द ॐ नमः शिवा य ॐ नमो नमः ॐ न शिवा य नमो नमः ॐ जुं य क्ति त त्वा य
 नमः॥ स र्दु शा त्रि ज यं नित्यं स र्दु या ये य मुच्यते॥ उ ष्म द वे सु स र्वे सु स र्वो त्वा
 ने सु त्वा मु त्वा॥ मुच्यते ना त्र सं दे हो स त्पं स त्पं शि खि ध ज॥ स्था य ना र्द्ध न क म्पा
 दि दी क्षा चार त्प यो बुधः य च्छा ते न कु रते सा क्षा दि क्षा य तै विष यते रोगा

नमः॥ वायुवेदसे॥ ॐ सुः सर्वे रमा हाते जा ज्यो गाधि पे नमः॥ मुञ्च २ यम
 य २ सद्य २ भव २ भवो ३ व सच्च ३ त सुख ३ दे नमः॥ ॐ जुं महे च रा य निति
 यत त्वा य नमः॥ उत्तरदले॥ ॐ जुं सर्व शान्ति धे कर व ल विष्णु ह ड य र न्य
 नर्द्धित २ अ स सुत २ पू र्ण व क्षि २ सा क्षि न २ तु ह २ य त ग २ र्पि ग २ नमः॥ ॐ
 जुं श्री क ण्ठ य नमः॥ इ शान द ले॥ ॐ जुं ॐ ज्ञान २ शब्द २ स र्वा २ शिव स र्व
 द ॐ नमः शिवा य ॐ नमो नमः ॐ न शिवा य नमो नमः ॐ जुं य क्ति त त्वा य
 नमः॥ स र्दु शा त्रि ज यं नित्यं स र्दु या ये य मुच्यते॥ उ ष्म द वे सु स र्वे सु स र्वो त्वा
 ने सु त्वा मु त्वा॥ मुच्यते ना त्र सं दे हो स त्पं स त्पं शि खि ध ज॥ स्था य ना र्द्ध न क म्पा
 दि दी क्षा चार त्प यो बुधः य च्छा ते न कु रते सा क्षा दि क्षा य तै विष यते रोगा



कलस



कुरु



दव



पार



कुरु कुरु ल पूजा



ॐ

कुरु कुरु
हि धर्म

वलि



वलि



सं



च न्य

उ न

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

पूजा का

ॐ



सना ००

उगचधुयाऊलुध्व गलसवायना

धपासेनव, वृक्षा, मानध्व

वलि वलि

पाउ पनानिया

कोमात्री वाहालनश्रावाध्यावाने

मूल, वाष्म, धा



गवडा



पाउ इइतय



वलि



पाउ



वलि

पनानिया